डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part - I
General & Subsidiary
HINDI

Date:- 11-02-2023

'सखि, कि पुछसि अनुभव मोय'

सखि, कि पुछसि अनुभव मोय
सो हो पिरीति अनुराग बखानइत,
तिल - तिले नूतन होय।
जनम अवधि हम रूप निहारल,
नयन न तिरपित भेल।
सेहो मधु बोल स्रवनहि सूनल,
सुति - पथ परस न भेल।
कत मधु जामिनि रभसे गमाओल,
न बुझल कइसन केल।
लाख - लाख जुग हिये - हिये राखल,
तइयो हिय जुड़न न गेल।
कत विदग्ध जन रस अनुमोदइ,
अनुभव काहु न पेख।
विद्यापति कह प्राण जुड़ाएत लाखे मिलन एक।

शब्दार्थ :-

- पुछसि - पुछती हो
- मोय - मेरा
- जनम अवधि - जीवन भर
- रभस - आनंद में
- मधुयामिनी - वसंत ऋतु की रात
- कैसन - कैसी
- अनुमोदए - आस्वादन करते हैं
- केल - केलि
- जुड़ल - संतुष्ट
- हिया - हृदय

व्याख्या :-

प्रस्तुत पद में अनुराग की व्याख्या की गई है। एक सखी दूसरी से कहती है - मेरा अनुभव क्या पूछती हो? उसी प्रीति को सच्चा अनुराग कहा जाता है जो क्षण-क्षण नवीन प्रतीत हो, जो चिर नवीन है, कभी पुरानान पड़े। ऐसे प्रेम का अनुभव पाना कितना कठिन है? मैंने जीवन भर अपना प्रियतम का रूप निहारा है। किन्तु आँखे तृप्त नहीं हुई। मैंने उसकी मधुर वाणी अपने कानों से सुनी पर ऐसा लगता है कि जैसे इस वाणी को सुनने के लिए मन लालायित है। मैंने वसंत ऋतु की कितनी रातें आनन्द में व्यतीत की, परन्तु वह क्रीड़ा कैसी रही, यह मुझे ज्ञात न हुआ। लाखों युगों से, जन्मांतर से प्रिय की मूर्ति हृदय में धारण किये रही फिर भी हृदय संतुष्ट न हुआ, शीतल न हुआ। जिस प्रेम में संतोष न हो, जिसकी चाह बराबर बढ़ती जाय, उसकी अनुभूति एक महान साधना है, महान वरदान है। कितने विदग्ध रसिक लोग इस रस का आस्वादन करते रहे किन्तु किसी को इसके सत्य रूप का सही अनुभव नहीं हुआ। विद्यापति के शब्दों में, सखी अंत में कहती है कि लाखों में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसे प्रेम से तृप्ति हुई हो।